पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा को व्यावहारिक जीवन में उतारने के प्रयास और उनका दूरदर्शी योगदान

[1]रजनी द्विवेदी और [2]डा0 विपिन कुमार सिंह
[1]शोधार्थी, डी0एस0एन0पी0जी0 कॉलेज, उन्नाव
[2]सहायक प्रोफेसर, शिक्षक प्रशिक्षण विभाग, डी0एस0एन0पी0जी0 कॉलेज, उन्नाव

सारांश -भारतीय ज्ञान-परंपरा सदैव जीवनपयोगी और क्रियात्मक रही है, जिसका उद्देश्य केवल शास्त्रार्थ तक सीमित न होकर समाज को मार्गदर्शन देना रहा है भारत की ज्ञान-परंपरा और विद्या-संपदा ने सदियों से पूरी दुनिया के जिज्ञासु मनीषियों को अपनी ओर आकर्षित किया। यही कारण रहा है कि विभिन्न युगों में अनगिनत विद्वान, मनीषी और शोधार्थी यहां आये। उन्होने केवल यहां ठहरकर गहन अध्ययन और साधना ही नहीं की, बल्कि यहां की अद्भुत पुस्तकों, शास्त्रें और विचारों का विशाल भंडार भी अपने साथ ले गये। यह अमूल्य ज्ञान वह मार्ग में मिलने वाले लोगों तक पहुंचाते हुये अपने-अपने देशों में ले गये और वहां इसका प्रचार प्रसार व विस्तार किया। इस क्रम में अनेक चीनी पंडितों तथा मध्य एशिया, युरोप और पश्चिम एशिया से आये विद्वानो ने भारत की विद्या-सम्पदा को दूर-2 तक पहुँचाकर विश्व को आलोकित किया। परिणामतः विश्व के अनेक देशों ने भारत की समृद्ध ज्ञान-धारा से गहन प्रेरणा और लाभ प्राप्त किया। किन्तु मध्यकाल में लगातार विदेशी आक्रमणो और आंतरिक कलह के कारण देश के विभिन्न हिस्सों पर परकीय शासन, स्थापित हो गया, जिससे इस अद्वितीय परंपरा के प्रसार पर प्रतिकूल असर पड़ा। भारतीय चिंतन की तेजस्विता कुछ समय के लिये बंद अवश्य पड़ी परन्तु उसका प्रवाह कभी थमा नही। बाधाओं और अवरोधों के बीच भी यहां ज्ञान-अर्जन और पुनः सृजन की अखंड परंपरा जीवित रही, जो समय-समय पर नये रूपो में पुनः प्रकट होती रही और अपनी निरंतरता बनाये रखी।

[रजनी द्विवेदी और डा0 विपिन कुमार सिंह. **पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा को व्यावहारिक जीवन में उतारने के प्रयास और उनका दूरदर्शी योगदान** *The International Journal of Interpretation, Observation and Analysis*, 2025; Volume 4, Issue 1:1-4 (October-December). ISSN 2349-0713, Peer-reviewed (online/offline), Refereed, Indexed and International Journal (Since 2013), Global Impact Factor: 6.205

मुख्य शब्द -
जीवनपयोगी, क्रियात्मक, शास्त्रार्थ, ज्ञान-परंपरा, जिज्ञासु मनीषियो, अद्भुत, अमूल्य, विद्या-सम्पदा, समृद्ध, परकीय, अद्वितीय, तेजस्विता।

प्रस्तावना -

प्रतिकूल और कठिन परिस्थितियों में भी असंख्य संतों आचार्यों, महंतों और विद्वानो ने अपने अनवरत ज्ञान परंपरा की अमर ज्योति को उज्जवल और सजीव बनाये रखा। नरसिंह महता, सूरदास जी, गोस्वामी तुलसीदास जी, गुरूनानक देव और दस गुरूओं की परंपरा सहित अनेक संतो ने तथा उत्तर मध्यकाल में आधुनिक शिक्षा से आलोकित महापुरूष जैसे स्वामी दयानंद सरस्वती, राजा राममोहन राय, स्वामी विवेकानन्द, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने अपनी प्रेरक वाणी, प्रभावशाली लेखनी, देश-व्यापी यात्रओं और सतत् प्रयासों के माध्यम से भारतीय ज्ञान-संस्कृति की उज्जवल धारा को जन-जन तक पहुंचाया। उन्होने न केवल देशवासियों को अपनी महान परंपरा का बोध कराया बल्कि राष्ट्र की गुप्त चेतना को जागृत कर भारत के स्वाभिमान और सौभाग्य को नया उत्साह प्रदान किया। स्वामी विवेकानन्द जैसे युगप्रवर्तक संतो ने विदेश की धरती पर भारतीय ज्ञान और दर्शन का ऐसा उद्घोष किया कि सम्पूर्ण विश्व विस्मित रह गया। यह जागरण का सिलसिला आगे के वर्षो में भी थमा नहीं। पराधीनता के कठिन दौर में भी भारत की ज्ञान-गंगा अविरल प्रवाहित होती रही। महात्मा गांधी, बाल गंगाधर तिलक, गोपालकृष्ण गोखले, महर्षि अरविंद और डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जैसे मनीषियों ने अपनी गहन चिन्तन-शक्ति प्रेरक लेखनी और अद्वितीय व्यक्तित्व के बल पर न केवल देशवासियों को भारतीय संस्कृति और बौद्धिक विरासत का बोध कराया, बल्कि अपनी उज्जवल

कृतियों और विचारों से सम्पूर्ण विश्व को भी गहराई से प्रभावित किया।

अध्ययन का उद्देश्य -

प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन हेतु प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार निरूपित किये गये हैं।

1. भारतीय ज्ञान परंपरा का विशद अन्वेषण करना।
2. अध्ययन के पश्चात् गहन एवं व्यापक ज्ञान प्राप्त करना।
3. भारतीय ज्ञान परंपरा ने पंडित दीनदयाल को किस प्रकार प्रभावित किया, इसका गहन अध्ययन।
4. भारतीय ज्ञान परंपरा ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय के चिन्तन और विचारधारा पर किस प्रकार प्रभाव डाला, इसका विश्लेषण करना।
5. पांडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा में हुयें सशक्तिकरण और उसका स्वरूप विश्लेषित करना।

मुख्य पाठ -

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का भारतीय ज्ञान परंपरा को समृद्ध और सशक्त बनाने में विशेष योगदान-स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत की राजनीति के साथ-साथ चिंतनशील भारतीय मनीषा के सामने यह प्रश्न गंभीर रूप से खड़ा था कि राष्ट्र का भावी मार्ग कौन-सा होगा। शासन की बागडोर संभालने वाले नेताओं के बीच भी इस विषय पर मतभेद स्पष्ट थें वहीं सत्ता से दूर रहकर महात्मा गांधी का विचारदर्शन पूरी तरह भारतीय संस्कृति और परंपराओं में निहित था, जो देश के भविष्य के लिये एक मौलिक दिशा प्रस्तुत करता था।

नेहरू और उनके सहयोगियों का दृष्टिकोण उस समय मुख्यतः पश्चिमी विचारधाराओं और समाजवादी सिद्धांतों से प्रभावित था। गांधी जी के निधन के पश्चात् राष्ट्र के नेतृत्व की बागडोर पूरी तरह से पंडित नेहरू के हाथों में आ गई और देश की दिशा तय करने का दायित्व उन्ही पर आ टिका। उनके नेतृत्व में भारत ने ऐसी नीतियां अपनायीं, जिनमें समाजवाद, अर्थव्यवस्था, केंद्रीकृत योजनायें, मिश्रित उद्योग व्यवस्था और प्रशासनिक ढांचे पर गहरा प्रभाव दिखाई दिया। यह सोच आधुनिकता और प्रगति के नाम पर पश्चिमी मॉडल को अपनाने की ओर झुकी हुई थी। समय के साथ इन नीतियों के परिणाम भी सामने आये, कई क्षेत्रें में विकास की पहल हुई, परन्तु अर्थव्यवस्था में सरकारी नियंत्रण लालफीताशाही और योजनाबद्ध ढांचों की सीमायें भी स्पष्ट दिखीं। राजनीति और प्रशासन में जो ढर्रा उस दौर में बना, उसकी छाप आज तक भारतीय शासन व्यवस्था पर देखी जा सकती है।

इस कालखण्ड में अनेक ऐसे दूरदर्शी चिंतक भी सामने आये, जो भारत की जटिल समस्याओं का समाधान पश्चिमी विचारधाराओं में नहीं, बल्कि अपनी ही सांस्कृतिक दृष्टि, प्राचीन अनुभव और समृद्ध ज्ञानपरंपरा में खोजते थे। दुर्भाग्यवश, उस समय उनकी योजनाओं और विचारों को व्यापक रूप से लागू करने का अवसर नहीं मिल सका। ऐसे ही विलक्षण दृष्टिकोण वाले महामनीषी थे पंडित दीनदयाल उपाध्याय जिन्होने भारतीय मूल्यों पर आधारित मार्गदर्शन से राष्ट्र को आत्मनिर्भर और सांस्कृतिक रूप से सशक्त बनाने का विचार प्रस्तुत किया। बचपन से ही अत्यन्त मेधावी दीनदयाल उपाध्याय ने अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुये अपनी शिक्षा जारी रखी। उच्च अध्ययन के दौरान उनका परिचय राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के दूरदर्शी प्रचारकों से हुआ और नाना जी देशमुख के माध्यम से वे तत्कालीन सरसंघचालक से भी जुड़े। इसी प्रेरणा के चलते उन्होने पढ़ाई के बीच में ही संघ के प्रचारक का दायित्व स्वीकार किया। आगे चलकर संघ की योजना के अनुरूप वे सक्रिय राजनीति में आये और 1952 में नवगठित भारतीय जनसंघ के संस्थापक सदस्यों में शामिल हुये। गहन चिंतनशील पंडित उपाध्याय ने जब भारतीय राजनीति, अर्थव्यवस्था, समाजव्यवस्था और अन्य क्षेत्रें की चुनौतियों का सूक्ष्म अध्ययन किया, तो वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि इन समस्याओं का स्थायी समाधान केवल भारतीय दृष्टिकोण और अपनी समृद्ध दार्शनिक परंपरा के आधार पर ही सम्भव है। गहन अध्ययन और मनन के बाद उन्होने राष्ट्र को अनेक मौलिक विचार दिये जो तत्कालीन परिस्थितियों में भारत के लिये अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकते थे। यद्यपि उस समय राजनीतिक हालात उनके पूर्ण क्रियान्वयन के अनुकूल नहीं थे, फिर भी जब-जब राष्ट्रीयता और भारतीय संस्कृति से प्रेरित शासन को अवसर मिला, तब-तब दीनदयाल जी की दृष्टि से प्रेरित नीतियों को अपनाने और लागू करने

का गंभीर प्रयास किया गया। आज भी उनकी विचारधारा का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता हैं केन्द्र और कई राज्यों की सरकारें की विभिन्न योजनायें और नीतियां इसका प्रमाण है। विशेष रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 व आधार यदि गहराई से परखा जाये, तो यह साफ प्रतीत होता है कि उसकी जड़ें पंडित दीनदयाल उपाध्याय की व्यावहारिक सोच और भारतीय ज्ञान परंपरा में ही निहित हैं।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के मूल सिद्धांत और प्रमुख धारणायें :-

स्वतंत्रता के बाद भारत की राजनीति मे पंडित दीनदयाल उपाध्याय उन व्यक्तियों में गिन जाते है, जिन्होने केवल, राजनीति और संगठन में ही नहीं, बल्कि गहन वैचारिक धरातल पर भी अमिट छाप छोड़ी प्रायः उन्हे एक कुशल संगठनकर्ता और सक्रिय राजनेता के रूप में जाना गया, परन्तु उनका असली योगदान एक प्रखर चिंतक और मौलिक विचारक के रूप में अधिक महत्वपूर्ण हैं उनके चिंतन में भारतीय मनीषा, संस्कृति और परंपरा की उज्जवल छाप स्पष्ट दिखाई देती हैं विद्वानो का मत है कि पंडित उपाध्याय बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र और राजनीति जैसे विविध विषयों पर उनके विचार केवल व्यक्तिगत अनुभव का परिणाम नहीं थे, बल्कि भारत की प्राचीन ज्ञान-संपदा का युगानुकूल पुरराविष्कार भी थे। उन्होने भारतीय दृष्टि से जो सिद्धांत प्रस्तुत किये वे आज भी राष्ट्र के लिये दिशा-निर्देशक और प्रेरणाश्रोत बने हुये हैं। उनके लम्बे अनुभव और भारत की गहरी सांस्कृतिक जड़ों से उपजा यह चिंतन आने वाले समय में भी देश की नीतियों और सामाजिक संरचना के लिये मार्गदर्शन करता रहेगा। ऐसे में उनके कुछ प्रमुख वैचारिक बिन्दुओं पर विचार करना विशेष रूप से प्रासंगिक प्रतीत होता है।

एकात्म मानववाद -

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद केवल कोई राजनीतिक सिद्धांत नहीं, बल्कि मनुष्य और समाज को समग्र दृष्टि से देखने की भारतीय पद्धति है। यह विचार कहता है कि व्यक्ति को अलग-अलग इकाई के रूप में नहीं, बल्कि परिवार, समाज, प्रकृति और व्यापक सृष्टि का हिस्सा मानकर समझा जाये। पाश्चत्य मॉडल जहां प्रगति को केवल भौतिक सुख-सुविधाओं में मापता है, वहीं एकात्म मानववाद इस बात पर बल देता है कि भौतिक मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक-चारों स्तरों पर मनुष्य की आवश्यकताओं का संतुलन ही वास्तविक विकास है।

अंत्योदय -

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का अंत्योदय केवल एक कल्याणकारी योजना का नाम नहीं, बल्कि समाज-दर्शन का ऐसा सिद्धांत है जो विकास को सबसे अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक पहुंचाने का संकल्प व्यक्त करता हैं अंत्योदय का मूल भाव है कि राज्य और समाज की हर नीति का आरम्भ उस व्यक्ति से हो, जिसे सबसे पहले मदद् की आवश्यकता है। यह दृष्टिकोण केवल सहायता देने तक सीमित नहीं है, इसका ध्येय आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देना है ताकि, कोई भी व्यक्ति दान या कृपा पर निर्भर ना रहे। यहां विकास का अर्थ केवल आय बढ़ाने या संसाधन बांटने से नहीं बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, मानवीय क्षमता को जागृत करने से है।

राष्ट्रनिर्माण -

उनका राष्ट्रनिर्माण दृष्टिकोण भारतीय संस्कृति और ज्ञानपरंपरा के गहरे मूल्यों पर आधारित था। उन्होने विदेशी मॉडल के अनुवर्तन से बचने का सुझाव दिया और कहा कि प्रत्येक नीति, योजना और कार्यक्रम को स्थानीय परंपरा, स्थानीय संसाधन और समय की आवश्यकता के अनुरूप ढालना चाहिये। उनका मानना था कि जब नागरिक अपने सांस्कृतिक मूल्यों को समझेगें और समाज की भलाई के लिये व्यक्तिगत स्वार्थो से ऊपर उठेगें, तभी राष्ट्र केवल भौतिक रूप से ही नहीं, बल्कि मानसिक और आत्मिक दृष्टि से भी सशक्त होगा।

चिर अखण्ड भारत की कल्पना -

पंडित दीनदयाल उपाध्याय की चिर-अखण्ड भारत की कल्पना केवल भौगोलिक सीमाओं या राजनीतिक एकता तक सीमित नहीं थी, यह दृष्टिकोण भारत की सांस्कृतिक, सामाजिक और आत्मिक अखंडता पर आधारित था। उनके अनुसार राष्ट्र की स्थायी शक्ति उसकी सीमाओं में नहीं बल्कि उसके लोगो के साझा मूल्यों, परंपराओं और राष्ट्रीय चेतना में निहित है। वे मानते थे कि जब तक नागरिक अपने इतिहास, संस्कृति और साझा संस्कारों को आत्मसात नहीं करेगें तब तक राष्ट्र केवल भौतिक रूप से ही नहीं, बल्कि मानसिक और सामाजिक दृष्टि से भी पूर्ण नहीं हो सकता।

सामग्री और क्रिया विधि -

प्रस्तुत शोध पत्र मुख्यतः सैद्धांतिक अध्ययन पर आधारित है; जिससे भारतीय परंपरा में उपलब्ध ज्ञान, प्राचीन और आधुनिक साहित्य, ग्रंथ तथा अन्य शोध सामग्री का विश्लेषण कर निष्कर्ष तक पहुंचने का प्रयास किया गया है। इसमें विशेष रूप से पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जीवन, उनके विचार, दर्शन और दृष्टिकोण पर केन्द्रित साहित्य का गहन अध्ययन किया गया है। साथ ही यह शोध यह समझने का प्रयास भी करता है कि उनके चिंतन और नीति दृष्टिकोण पर भारतीय ज्ञान परंपरा ने किस प्रकार प्रभाव डाला और उनके वैचारिक सिद्धांतों को किस हद तक प्रेरित किया। इस प्रक्रिया में न केवल ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भो का अध्ययन किया गया, बल्कि उनके विचारों की प्रासंगिकता और वर्तमान समय में उनके दर्शन की उपयोगिता को भी विश्लेषित किया गया है।

निष्कर्ष -

इस प्रकार यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा अपनी प्राचीनता और गहनता के कारण अद्वितीय हैं इसने न केवल विश्व के बौद्धिक और सांस्कृतिक विकास को प्रभावित किया हैं बल्कि प्रारम्भिक युग में ही अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया है। विश्व के विद्वानो ने भारतीय धर्म, दर्शन, ज्ञान और अध्यात्म से गहन प्रेरणा लेकर अपने-अपने समाज और राष्ट्र को समृद्ध किया हैं। ठीक इसी तरह, भारत के अनेक महानुभावों ने भी देश की प्राचीन और निरन्तर विकसित होती ज्ञान परंपरा से सीख्र लेकर समयानुसार अपने मौलिक विचारों और दृष्टिकोण को समाज के समक्ष प्रस्तुत किया, जिससे भारतीय समाज और संस्कृति की समृद्धि और व्यापकता और बढ़ीं ऐसे ही कई महान विचारकों और राष्ट्रदर्शियों में पंडित दीनदयाल उपाध्याय का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होने तत्कालीन परिस्थितियों और सामाजिक-सांस्कृतिक आवश्यकताओं का गहन अध्ययन करते हुये भारत के समग्र और संतुलित विकास की रूपरेखा अपने विचारों में प्रस्तुत की। उनके चिंतन में न केवल राष्ट्र की प्रशासनिक और राजनीतिक दिशा को स्पष्ट किया, बल्कि शासन व्यवस्था के लिये एक मार्गदर्शक आदर्श भी स्थापित किया।

भारतीय ज्ञान, परंपरा में अपार सामर्थ्य निहित है और इसे आज की तथा आने वाली पीढ़ियों के समक्ष सही तरीके से प्रस्तुत करना अत्यन्त आवश्यक हैं इसी दृष्टि को ध्यान में रखते हुये राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इसे समाहित किया गया है। उम्मीद की जा सकती है कि भविष्य की पीढ़ियाँ इस परंपरा से गहन लाभ उठाकर भारत को एक पुनः गौरवशाली और प्रगतिशील मार्ग पर अग्रसर करेंगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची -

1- प्राचीन भारतीय ज्ञान की गूंज, सार्वभौतिक हिंदू दृष्टि और इसकी इमारत- डॉ0 शांता एन. नायर
2- वैदिक ज्ञान- जे.एस. मेहता
3- प्राचीन भारतीय ज्ञान- आध्यात्मिक विरासत-पी.सेथुरमन
4- भारतीय दर्शन का एक परिचय- सतीश चंद्र चटर्जी
5- शर्मा डॉ0 महेश चन्द्र दीनदयाल उपाध्याय, कृतित्व एवं विचार प्रभाव प्रकाशन दिल्ली 2018 पृष्ठ -133
6- उपाध्याय दीनदयाल, एकात्म मानववाद तत्व भी ..... सिद्धांत विवेचकन, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली 2016, पृष्ट-63
7- बघेल, अंजू, पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी के विचारो का दर्शन स्वारंजलि पब्लिकेशन, दिल्ली 2018, पृष्ट-96

INTERNATIONAL JOURNAL OF INTERPRETATION OBSERVATION & ANALYSIS